गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए पहल

मनोज कुमार त्रिपाठी

शिक्षा, समाज का एक प्रमुख सरोकार है। स्वाभाविक रूप से हम एक व्यक्ति और समाज के रूप में हमेशा बेहतर शिक्षा के बारे में सोचते हैं जिससे व्यक्तियों का और अन्ततः समाज का समग्र विकास हो सके। आज गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के विचार ने गति पकड़ ली है। शिक्षाविदों और यहाँ तक कि आम लोगों के बीच भी यह शब्द सरोकार और बहस का विषय है। वास्तव में तो शिक्षा अपनी प्रकृति और परिणाम में गुणात्मक ही है। चर्चा या सरोकार का विषय तो उसकी प्रक्रिया, विषय-सामग्री आदि होना चाहिए। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न स्तरों पर कई हस्तक्षेप और अभिनव विचार लागू किए जा रहे हैं और उन्हें अभ्यास में भी लाया जा रहा है, विशेष रूप से प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में।

हमारे राज्य में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित शिक्षकों के सतत पेशेवर विकास के लिए पच्चीस से अधिक क्षेत्रों की पहचान की गई है ताकि उनकी पेशेवर आवश्यकताओं और चुनौतियों को पूरा किया जा सके। इसके अलावा, उद्देश्य यह है कि कक्षा को आकर्षक बनाया जाए, कक्षा की गतिविधियों में प्रभावशीलता और जीवन्तता लाई जाए और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि बच्चों को एक ऐसा अनुकूल माहौल प्रदान किया जाए जहाँ वे अपने ज्ञान का निर्माण कर सकें।

कला एकीकृत शिक्षा (आर्ट इंटीग्रेटेड लर्निंग-एआईएल), साक्षरता से सम्बन्धित स्कूल तैयारी कार्यक्रम, प्रारम्भिक साक्षरता, गणना कौशल, आनन्ददायक रूप में अँग्रेज़ी जैसे पेशेवर विकास कार्यक्रम निरन्तर लागू किए जा रहे हैं जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यकताओं को पूरा करने में काफ़ी प्रभावी और सहायक साबित हुए हैं।

कला एकीकृत शिक्षा कार्यक्रम (एआईएल) एनसीईआरटी के प्रमुख कार्यक्रमों में से एक है। इसे 2013 में बिहार में एससीईआरटी बिहार की पहल और यूनिसेफ़ के समर्थन के साथ शुरू किया गया था। मास्टर ट्रेनर्स के बैच एनसीईआरटी की विशेषज्ञ संसाधन टीम द्वारा प्रशिक्षित किए गए थे। तब से एआईएल कार्यक्रम में बढ़ोतरी कर दी गई और अब यह सीपीडी का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। प्रारम्भ में इसे पूर्ण समर्थन और उत्साह के साथ 20 ज़िलों के 200 स्कूलों में शुरू किया गया जिनमें से प्रत्येक ज़िले में 10 स्कूल हैं। शिक्षकों, सीआरसीसी एवं बीआरपी को एआईएल की शिक्षण प्रक्रिया का प्रशिक्षण दिया गया। इसके तात्कालिक परिणाम काफ़ी सकारात्मक हैं। वास्तव में सीखने की प्रक्रिया में कला के एकीकरण ने न केवल स्कूलों में एक दोस्ताना और आनन्ददायक वातावरण बनाया है, बल्कि यह कक्षा की गतिविधियों में जीवन्तता और आकर्षण को वापस लाने की एक गतिशील शैक्षणिक प्रक्रिया के रूप में भी स्थापित हो गया है। बच्चों की उपस्थिति, जुड़ाव और भागीदारी कई गुना बढ़ गई है, स्कूल के वातावरण में पहला और सबसे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन जीवन्त चेतना सत्र (प्रातःकालीन प्रार्थना सभा) के रूप में साफ़ नज़र आता है।

बाल-संसद और प्रशिक्षित शिक्षकों के सक्षम नेतृत्व में बच्चे नियमित तालबद्ध तरीक़े से विभिन्न शैली में अलग-अलग आकार बनाते हैं। राज्य की प्रार्थना और राष्ट्रगान के अलावा चेतना सत्र में वे उत्साहजनक रूप से भक्ति और स्थानीय लोक-गीत भी गाते हैं जो उनकी संस्कृति का सार है। समाचार पढ़ना, स्थानीय समाचार लिखना और एकत्र करना, कविता पाठ, प्रेरक वार्ता, जन्मदिन और पर्व मनाना, सामाजिक और सांस्कृतिक समारोह आदि प्रातःकालीन प्रार्थना सभा के नियमित अंग बन गए हैं। दिलचस्प बात यह है कि चेतना सत्र की गतिविधियाँ इस तरह से डिज़ाइन की गई हैं कि उन्हें आसानी से विभिन्न विषयों, अवधारणाओं और कक्षा-गतिविधियों के साथ एकीकृत किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए यदि बच्चे किसी विशेष दिन किसी विशेष आकार या डिज़ाइन में खड़े हैं तो हो सकता है कि यह कक्षा

1 से 8 के लिए आकार, माप और परिमाप के बारे में चर्चा और समझ का एक बिन्दु हो। प्राथमिक कक्षाओं के लिए यह अवलोकन, पहचान, आत्मसात्करण (assimilation), वर्गीकरण इत्यादि का विषय हो सकता है जबकि उच्च कक्षाओं के लिए यह परिमाप, क्षेत्रफल, मापन आदि का विषय है।

एआईएल, प्रचुर मात्रा में उपलब्ध स्थानीय संसाधनों के साथ स्थानीय कला और सांस्कृतिक घटकों को एकीकृत करने के लिए पर्याप्त गुंजाइश और अवसर प्रदान करता है। रंग और क्रेयॉन, रेत और मिट्टी, काग़ज़ और पत्तियाँ, कपड़े और परिधान, इस कार्यक्रम में शामिल हर चीज़ एक प्राकृतिक भावना प्रदान करती है। यह कार्यक्रम विभिन्न अवधारणाओं को बेहतर तरीक़े से समझने के लिए शिक्षण-अधिगम सामग्री

के निर्माण में मदद करता है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इन सभी प्रक्रियाओं में बच्चों की सक्रिय भागीदारी होती है इसलिए वे इनके साथ पूरी तरह से जुड़ जाते हैं। अलग-अलग कक्षा-स्तरों और विभिन्न विषयों के साथ जोड़ने के लिए जब दृश्य और प्रदर्शन कलाओं के विभिन्न रूपों को पहचानकर कक्षा में उनका उपयोग किया जाता है तो कक्षा में एक जीवन्त वातावरण का निर्माण होता है, जो बच्चों के लिए दिलचस्पी और ख़ुशी से भरा होता है। शैक्षणिक दृष्टि से भी एआईएल बच्चों को कल्पना और व्यक्त करने, अपनी रचनात्मकता और अभिव्यक्ति को दर्शाने, अवधारणाओं को समझने, उपयुक्त कौशल विकसित करने जैसे और कई अन्य अवसर प्रदान करता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का वातावरण निर्मित करने के लिए एससीईआरटी और डाइट द्वारा उचित प्रशिक्षण, अकादमिक इनपुट और समर्थन के साथ पूरे राज्य के ज़्यादातर स्कूलों में एआईएल के शिक्षणशास्त्र को अपनाया जा रहा है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में एक और दिलचस्प तथा अभिनव हस्तक्षेप है *चहक* जो स्कूल की तैयारी (स्कूल रेडिनस प्रोग्राम) का कार्यक्रम है। पहली बार स्कूल आने वाले बच्चों को स्कूल में अपना स्थान और पहचान प्राप्त होनी चाहिए। उन्हें स्कूल अपने घरों के जितना ही सुखद लगना चाहिए। स्कूल का वातावरण अनुकूल, मैत्रीपूर्ण और आनन्ददायक होना चाहिए, जिससे बच्चे स्कूल के साथ अन्तरंगता महसूस करें। यह कार्यक्रम अधिगम की सुनिश्चितता के लिए 'तैयार बच्चे और

तैयार स्कूल' की भावना पर आधारित है। *चहक* कार्यक्रम इस मिथक को तोड़ रहा है कि केवल शिक्षक ही अधिगम को सुनिश्चित कर सकता है। यह कार्यक्रम दृढ़ता से इस तथ्य को स्थापित करता है कि प्रत्येक बच्चे में सीखने की क्षमता होती है और वह सीखने के लिए तैयार होता है। यह 24 दिवसीय कार्यक्रम नए सत्र के प्रारम्भ में, ज़्यादातर नए प्रवेश लेने वाले बच्चों के साथ शुरू होता है। बच्चों के सन्दर्भ, पृष्ठभूमि और पिछले अनुभवों को ध्यान में रखते हुए यह कार्यक्रम इस तरह से डिज़ाइन किया गया है कि बच्चे बिना किसी हिचकिचाहट के स्कूल के वातावरण से परिचित हो सकें।

चहक की गतिविधियों के ज़रिए यह सुनिश्चित करने का प्रयास है कि बच्चों के लिए स्कूल एक स्नेहपूर्ण, आकर्षक और भयरहित स्थान हो, ख़ासकर उन बच्चों के लिए जो पहली बार स्कूल आ रहे हैं। जो बच्चे पहले कभी प्री-स्कूल नहीं गए हों, हाशिए वाली पृष्ठभूमि से हों और या जिन्हें पाँच या छह वर्ष की कच्ची उम्र में अपेक्षित मनोवैज्ञानिक समर्थन नहीं मिल पाया हो – यह कार्यक्रम उन बच्चों के लिए इन परिस्थितिजन्य कमियों की भरपाई करने की कोशिश भी करता है।

चहक कार्यक्रम, स्कूल और वहाँ के शिक्षकों के लिए बच्चों को समझने और उन्हें अपनाने की प्रक्रिया को भी आसान बनाता है। इस कार्यक्रम में कहानी कहना, खेल-कूद, सही हाव-भाव के साथ कविता-पाठ, अभिनय, गायन, नृत्य व नाटक, मिट्टी, रेत, क्रेयॉन और रंगों के साथ खेलना, स्केचिंग, पेंटिंग, अवलोकन और नेचर वॉक के माध्यम से आसपास के वातावरण की पहचान करना शामिल है।

बिहार बाल भवन किलकारी, बिहार शिक्षा परियोजना, एससीईआरटी बिहार और यूनिसेफ़ के समर्थन से राज्य के सभी स्कूलों में *चहक* कार्यक्रम लागू किया जा रहा है। कक्षा 1 और 2 के शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया है। शिक्षक न केवल प्रशिक्षण का आनन्द ले रहे हैं बल्कि बदलाव लाने के लिए अपने-अपने स्कूलों में एक आनन्दपूर्ण, जीवन्त और मैत्रीपूर्ण माहौल भी बना रहे हैं।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु एक अन्य पहल है - *खेले पढ़े बढ़े बिहार* जो खेल आधारित अधिगम कार्यक्रम है। यह सच है कि हर बच्चे में बहुत सारी क्षमता होती है और वह रचनात्मक ऊर्जा और शक्ति से भरा होता है। बच्चे प्रकृति से जिज्ञासु और अन्वेषणशील होते हैं, उनमें नेतृत्व करने के सहज गुण और सहयोग और मदद करने की प्रवृत्ति होती है। वे अपनी पूरी ताक़त और क्षमता के साथ अपने इच्छित तरीक़े से कार्य करने की कोशिश करते हैं। उनकी संलग्नता और गतिविधियों को देखकर हम इसका अनुभव कर सकते हैं ख़ासकर तब जब वे खेल रहे हों। उनके इस गुण को देखकर हम यह महसूस कर सकते हैं कि उनके सामर्थ्य और गुणों को अधिगम के संवर्धन के लिए प्रभावी ढंग से प्रयोग में लाया जा सकता है।

खेल-कूद में उन्हें अपने उत्साह, जोश और भागीदारी की पूर्ण क्षमता दिखाने के अवसर मिलते हैं। इसी धारणा के साथ राज्य में खेल-आधारित-अधिगम का कार्यक्रम *खेले पढ़े बढ़े बिहार* शुरू किया गया है। इस कार्यक्रम की ख़ासियत यह है कि इसमें बच्चों के अनुकूल विभिन्न खेलों को शामिल किया गया है जो गणित, विज्ञान और भाषायी कौशलों की अवधारणाओं के साथ सही ढंग से एकीकृत किए गए हैं। खेल आधारित अधिगम की थीम 'विकास के लिए खेल' है। इसमें विभिन्न श्रेणियों के लगभग सभी खेलों और खेल सम्बन्धी गतिविधियों को शामिल किया गया है। खेलों को इस तरह से डिज़ाइन और संशोधित किया गया है कि बाहर खेले जाने वाले खेल आसानी से कक्षा के अन्दर भी एक छोटी-सी जगह में खेले जा सकते हैं। इसमें स्वास्थ्य और आरोग्य, स्वच्छता और शारीरिक साक्षरता भी शामिल है। स्थानीय विशिष्ट खेलों के महत्त्व को समझते हुए उनका चयन भी किया गया है ताकि बच्चे अपनी रुचि के अनुसार, रचनात्मकता के साथ और खेल-खेल में ही सीख सकें।

यह कुछ पहल हैं जो राज्य में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की माँग और चुनौतियों को पूरा करने के लिए चलाई जा रही हैं। इन कार्यक्रमों की लागत कम है और यह स्थानीय संसाधनों पर आधारित हैं, इसलिए स्कूल, शिक्षक, बच्चों और यहाँ तक कि माता-पिता ने भी इन्हें आगे बढ़कर अपनाया है और इनके साथ जुड़ गए हैं।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इन सभी कार्यक्रमों की प्रकृति समावेशी है और किसी भी प्रकार के अवरोध के बिना इनमें सभी की भागीदारी और जुड़ाव के लिए पर्याप्त अवसर हैं। इसमें कोई शक़ नहीं कि यह कार्यक्रम सरल, रोचक और सहज हैं क्योंकि वे सभी को शामिल करने का अवसर प्रदान करते हैं। उनका प्रभाव अधिक स्थितिपरक और तत्काल होता है जिसकी तुलना अनुभवजन्य आँकड़ों के साथ भी नहीं की जा सकती।

प्रत्येक दिन एक नई आशा, अपेक्षा और अनुभवों से भरा नया क्षितिज साथ लेकर आता है। बच्चे अपने अनुभवों और स्थानीय संसाधनों के साथ इन कार्यक्रमों की प्रभावशीलता को आगे बढ़ाने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। यह सभी कार्यक्रम समुदाय को क़रीब लाने के अवसर प्रदान करते हैं और कई जगहों पर चलाए जा रहे हैं।

मनोज कुमार त्रिपाठी वर्तमान में सरकारी स्कूल, भेल डुमरा, आरा, भोजपुर, बिहार में प्रधानाध्यापक हैं। वे डाइट पिरौटा, भोजपुर में अतिथि विद्वान हैं। वे प्राथमिक कक्षाओं की विज्ञान-पुस्तकों, डीएलएड की पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और स्व-अधिगम सामग्री तथा सेवा-पूर्व व सेवाकालीन शिक्षक-प्रशिक्षण मॉड्यूल के विकास के साथ जुड़े हुए हैं। वे एससीईआरटी बिहार एवं बिहार शिक्षा परियोजना परिषद के ट्रेनर, विषय-विशेषज्ञ और राज्य संसाधन समूह के सदस्य हैं। उनसे *manojtripathy365@gmail.com* पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल